पाठ 14. प्लास्टिक प्रदूषण

पाठ का परिचय

मानव विकास करता जा रहा है। विकास के साथ-साथ वह प्रदूषण के खतरे को भी झेल रहा है। प्रदूषण के कारण पृथ्वी पर जीवन खतरे में पड़ गया है। प्रकृति ने मनुष्य को अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ दीं और उनकी रक्षा व संरक्षण का उत्तरदायित्व सौंपा। मनुष्य ने इन वस्तुओं के साथ छेड़छाड़ की और पर्यावरण को अत्यधिक हानि पहुँचाई। आधुनिकता की इस दौड़ ने वायु तथा जल प्रदूषण से हटकर एक नए प्रदूषण को जन्म दिया, जिसे हम प्लास्टिक प्रदूषण का नाम दे सकते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण दुष्प्रभाव काफ़ी व्यापक और गंभीर हैं। इसका सबसे खतरनाक पहलू यह है कि प्लास्टिक का अपघटन प्राकृतिक रूप से नहीं हो पाता। यही कारण है कि हमारी पृथ्वी प्लास्टिक कचरे के बोझ तले दबती जा रही है। प्लास्टिक प्रदूषण का सबसे बड़ा स्रोत है, घरेलू कचरा। शहरों व घरों में उत्पन्न प्लास्टिक कचरे का न तो अपघटन ही होता है और न ही इसे जलाया जाता है। यही कारण है कि यह प्लास्टिक कचरा सैकड़ों वर्षों तक मिट्टी में दबा रहकर हमारी भूमि को प्रदूषित करता रहता है। प्लास्टिक से बढ़ रहे इस प्रदूषण को रोकना आवश्यक हो गया है। आज आवश्यकता है कि हम अपनी जीवन-शैली को बदलें और प्लास्टिक के प्रयोग पर रोक लगाएँ।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

बढ़ते प्रदूषण के प्रति सजग होकर उसकी रोकथाम के लिए प्रयत्न करना। अधिक से अधिक पेड़ लगाना और प्रकृति को हरी-भरी करना।

पाठ का वाचन

पाठ को कक्षा में पढ़ाने से पहले प्रदूषण पर चर्चा करें। पाठ का आदर्श वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। बच्चों को पाठ से संबंधित खोज करने को कहें। प्लास्टिक प्रदूषण के बढ़ने के कारण को खोजें। उसकी रोकथाम के उपाय सोचें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- पर्यावरण का क्या अर्थ है?
- प्रदूषण किसे कहते हैं?
- पर्यावरण में प्रदूषण के क्या कारण हैं?
- प्रदूषण को दूर करने के क्या उपाय हैं?
- बच्चे इसमें किस रूप में सहयोग कर सकते हैं?